दृष्टि The Vision

हिन्दी साहित्य (वैकल्पिक विषय)

टेस्ट-IV (प्रश्नपत्र-2)

8 Test

निर्धारित समय: तीन घंटे
Time allowed: Three Hours

अधिकतम अंक: 250
Maximum Marks: 250

DTVF/19 (J-S)–M–**HL4**

Name: Alok Prasad
Mobile Number:
Medium (English/Hindi): Hindi
Reg. Number: *7100
Center & Date: MKN 04 Aug
UPSC Roll No. (If allotted): 5907766

प्रश्न-पत्र के लिये विशिष्ट अनुदेश

कृपया प्रश्नों के उत्तर देने से पूर्व निम्नलिखित प्रत्येक अनुदेश को ध्यानपूर्वक पढ़ें:
इसमें आठ प्रश्न हैं जो दो खण्डों में विभाजित हैं तथा हिन्दी एवं अंग्रेज़ी भाषा में मुद्रित हैं।
परीक्षार्थी को कुल पाँच प्रश्नों के उत्तर देने हैं।
प्रश्न संख्या 1 और 5 अनिवार्य हैं तथा बाकी में से प्रत्येक खण्ड से कम-से-कम एक प्रश्न चुनकर किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिये।
प्रत्येक प्रश्न/भाग के अंक उसके सामने दिये गए हैं।
प्रश्नों के उत्तर उसी माध्यम में लिखे जाने चाहियें जिसका उल्लेख आपके प्रवेश-पत्र में किया गया है, और इस माध्यम का स्पष्ट उल्लेख प्रश्न-सह-उत्तर (क्यू.सी.ए.) पुस्तिका के मुख-पृष्ठ पर अंकित निर्दिष्ट स्थान पर किया जाना चाहिये। उल्लिखित माध्यम के अतिरिक्त अन्य किसी माध्यम में लिखे गए उत्तर पर कोई अंक नहीं मिलेंगे।
प्रश्नों में शब्द सीमा, जहाँ विनिर्दिष्ट है, का अनुसरण किया जाना चाहिये।
जहाँ आवश्यक हो, अपने उत्तर को उपयुक्त चित्रों/मानचित्रों तथा आरेखों द्वारा दर्शाएँ। इन्हें प्रश्न का उत्तर देने के लिये दिये गए स्थान में ही बनाना है।
प्रश्नों के उत्तरों की गणना क्रमानुसार की जाएगी। यदि काटा नहीं हो, तो प्रश्न के उत्तर की गणना की जाएगी चाहे वह उत्तर अंशतः दिया गया हो। प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिका में खाली छोड़ा हुआ पृष्ठ या उसके अंश को स्पष्ट रूप से काटा जाना चाहिये।

QUESTION PAPER SPECIFIC INSTRUCTIONS

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:
There are EIGHT questions divided in TWO SECTIONS and printed both in HINDI & ENGLISH.
Candidate has to attempt FIVE questions in all.
Questions no. 1 and 5 are compulsory and out of the remaining, any THREE are to be attempted choosing at least ONE from each section.
The number of marks carried by a question/part is indicated against it.
Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly on the cover of this Question-cum-Answer (Q.C.A.) Booklet in the space provided. No marks will be given for answers written in a medium other than the authorized one.
Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.
Illustrate your answers with suitable sketches/maps and diagrams, wherever considered necessary. These shall be drawn in the space provided for answering the question itself.
Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

प्र. सं. (Q.No.)	a	b	c	d	e	कुल अंक (Total Marks)	प्र. सं. (Q.No.)	a	b	c	d	e	कुल अंक (Total Marks)
1							5						
2							6						
3							7						
4							8						
						सकल योग (Grand Total)							

मूल्यांकनकर्त्ता (हस्ताक्षर)
Evaluator (Signature)

पुनरीक्षणकर्त्ता (हस्ताक्षर)
Reviewer (Signature)

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

Section–A

1. निम्नलिखित गद्यांशों की (लगभग 150 शब्दों में) ससंदर्भ व्याख्या करते हुए उनके रचनात्मक सौंदर्य का उद्घाटन कीजिये: $10 \times 5 = 50$

(क) इस नयी सभ्यता का आधार धन है। विद्या और सेवा और कुल और जाति सब धन के सामने हेय हैं। कभी-कभी इतिहास में ऐसे अवसर आ जाते हैं, जब धन को आन्दोलन के सामने नीचा देखना पड़ता है, मगर इसे अपवाद समझिये। मैं अपनी ही बात कहती हूँ। कोई गरीब औरत दवाखाने में आ जाती है, तो घण्टों उससे बोलती तक नहीं, पर कोई महिला कार पर आ गयी, तो द्वार तक जाकर उसका स्वागत करती हूँ। और उसकी ऐसी उपासना करती हूँ, मानो साक्षात् देवी है।

सामाजिक निष्क्रियताओं को उजागर करने वाले प्रेमचंद के उपन्यास 'गोदान' में 'मेहनत की दुनिया' और 'मुनाफे की दुनिया' का चित्रण बखूबी हुआ है। उन्त पंक्तियों में 'मालती' के माध्यम से इसी विचार को प्रकट किया गया है।

मालती कहती है कि नयी दुनिया का आधार धन है। धन है तो कुल जाति इत्यादि कोई महत्व नहीं रखती मालती स्वंय इस बात को अपने ऊपर भी आरोपित करती हुई कहती है कि वह अमीर लोगों के इलाज में और गरीब लोगों के इलाज में कितना अंतर रखती है।

विश्लेषण

① समाज में धन का बढ़ता महत्व पूंजीवाद का परिचायक है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(2) गोबर भी धन के संबंध में कुछ हद तक समान दृष्टिकोण रखता है। "पैसा पास है तो न जात - बिरादरी का काम है न मरजाद का"

(3) भाषा सरल सहज खड़ी बोली है।

(4) कोटेशन का प्रयोग दृष्टित है।

प्रांसगिकता

(1) वर्तमान में धन का महत्व पूर्व की तुलना में अत्यधिक बढ़ा है। निर्धन व्यक्ति वंचित जीवन जीने को अभिशप्त है। आक्सफेम की हालिया रिपोर्ट दिखाती है कि भारत के 1% अमीर व्यक्तियों के पास 73% अर्जित सम्पत्ति है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(ख) लेकिन धरती माता अभी स्वर्णांचला है। गेहूँ की सुनहली बालियों से भरे हुए खेतों में पुरवैया हवा लहरें पैदा करती है। सारे गाँव के लोग खेतों में हैं। मानो सोने की नदी में, कमर-भर सुनहले पानी में सारे गाँव के लोग क्रीड़ा कर रहे हैं। सुनहली लहरें।! ताड़ के पेड़ों की पंक्तियाँ झरबेरी का जंगल, कोठी का बाग, कमल के पत्तों से भरे हुए कमला नदी के गड्ढे! डॉक्टर को सभी चीजें नई लगती हैं। कोयल की कूक ने डॉक्टर के दिल में कभी हूक पैदा नहीं की। किंतु खेतों में गेहूँ काटते हुए मजदूरों की 'चैती' में आधी रात को कूकनेवाली कोयल के गले की मिठास का अनुभव वह करने लगा है।

अंचल के समस्त यथार्थ को यूं का त्यों प्रदर्शित कर देने का माद्दा रखने वाले फणीश्वरनाथ रेणु सर्वोत्कृष्ट आंचलिक उपन्यासकार है। मैला आँचल की उक्त पंक्तियों में यही बात व्यंजित होती है।

रेणु कहते है कि गाँव में प्रकृति का अत्यधिक महत्व है ग्रामीण लोग प्रकृति से अत्यंत निकट रहते हुए उसमें व्याप्त प्रत्येक आनंद को जीते है। वह पुरवैया की हवा भी महसूस करते है। नदी के जल में क्रीडा भी करते है। वह शहर से आए डा॰ प्रशांत अभी ग्रामीण लोगों की भाँति प्रकृति में वो आनंद महसूस नहीं कर पा रहे है। हालाँकि अब प्रशांत भी कूकने वाली कोयल की मिठास का अनुभव कर पा रहे है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संवेदना

(1) प्रकृति के महत्व का प्रतिपादन छायावाद और स्वच्छंदतावाद के समरूप है

(2) भाषा में तत्समता और तद्भवता दोनों गुण दर्शित हो रहे हैं।

(3) विराम चिन्हों का सुंदर प्रयोग द्रष्टव्य है

(4) प्रसाद लिखते हैं

:: प्रकृति के यौवन का श्रृंगार
करेंगे कभी न बासी फूल

प्रासंगिकता

(1) शहरी जीवन में व्याप्त अकेलापन और निरर्थकताबोध से मुक्त जीवन का समाधान इसी ग्रामीण जीवन युक्त शैली को अपनाकर ही किया जा सकता है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) हमारा सृष्टि-संहार-कारक भगवान् तमोगुणजी से जन्म है। चोर, उलूक और लंपटों के हम एकमात्र जीवन हैं। पर्वतों की गुहा, शोकितों के नेत्र, मूर्खों के मस्तिष्क और खलों के चित्त में हमारा निवास है। हृदय के और प्रत्यक्ष, चारों नेत्र हमारे प्रताप से बेकाम हो जाते हैं। हमारे दो स्वरूप हैं, एक आध्यात्मिक और एक आधिभौतिक जो लोक में अज्ञान और अंधेरे के नाम से प्रसिद्ध हैं।

भारतेंदु हरिश्चंद्र की रचनाओं में नवजागरण की छाप दिखती है। वे आत्म आलोचना और आत्म परिष्कार दोनों भाव से युक्त रहते हैं। 'भारत दुर्दशा' की उक्त पंक्तियों में आत्म आलोचना का यही भाव परिलक्षित होता है।

अंधकार कहता है कि वह भगवान तमोगुण जी से जन्मा है। चोर, उलूक इत्यादि बुरी शक्तियों का सहारा अंधकार ही है। अंधकार का निवास पर्वतों की गुहा, शोकितों के नेत्र, मूर्खों के मस्तिष्क में है। हम सब दो स्वरूप से युक्त है जिसमें पहला आध्यात्मिकता है और दूसरा आधिभौतिकता, जिसमें अज्ञान और अंधेरा है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विशेष

① भारतेंदु की नवजागरण चेतना स्पष्ट है वह आत्म आलोचना के माध्यम से अपने समाज की प्रगति में बाधक तत्वों का विवेचन करते हैं।

② इसी प्रकार का दृष्टिकोण मैथिलीशरण गुप्त का है वह भारत-भारती में 'भारत की दुर्दशा' के कारणों को चिन्हित करते है।

③ भाषा शुरुआती खड़ी बोली है। किन्तु तत्समी प्रधान है

प्रांसगिकता

① व्यक्ति या समाज के परिष्करण हेतु आवश्यक है कि वह अपने कमियों को पहचाने और उन्हें दूर करें।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(घ) राजनीति साहित्य नहीं है, उसमें एक-एक क्षण का महत्त्व है। कभी एक क्षण के लिये भी चूक जाएँ तो बहुत बड़ा अनिष्ट हो सकता है। राजनीतिक जीवन की धुरी में बने रहने के लिये व्यक्ति को बहुत जागरूक रहना पड़ता है।

ऐतिहासिक आवरण में अपने युग की पीड़ा दर्शाना मोहन राकेश की रचनाओं का मर्म है। 'आषाढ़ के एक दिन' में प्रियंगुमंजरी और मल्लिका के बीच वार्तालाप के इस दृश्य में राजनीति का महत्व प्रतिपादित किया गया है।

प्रियंगुमंजरी राजनीति और साहित्य की तुलना करती हुए कहती है कि राजनीति में एक एक पल का महत्व है। राजनैतिक जीवन मे होने वाली एक गलती का परिणाम भी भयानक हो सकता है। अत: राजनैतिक व्यक्ति का जागरूक होना बेहद जरुरी है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विशेष

① राजनीति का अपरोक्त महत्व आज भी प्रासंगिक है।

② मन्नू भंडारी कृत महाभोज में 'दा साहब' भी राजनीति के इसी प्रकार के महत्व को प्रदर्शित करते है।

③ भाषा में सरलता सहजता मन्नू भंडारी का अहम गुण है।

④ सूत्र शैली द्रष्टव्य है।
" राजनीति साहित्य नहीं - - "

प्रासंगिकता

• वर्तमान में राजनीति में जागरूकता व्यक्ति की आवश्यकता पहले की तुलना अधिक आवश्यक हो गयी है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) कवित्व वर्णमय चित्र है, जो स्वर्गीय भावपूर्ण संगीत गाया करता है! अन्धकार का आलोक से, असत् का सत् से, जड़ का चेतन से, और बाह्य जगत् का अन्तर्जगत् से संबंध कौन कराती है? कविता ही न!

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

सांस्कृतिक राष्ट्रवाद, राष्ट्रीय चेतना और छायावादी दृष्टिकोण के परिचायक जयशंकर प्रसाद के उपन्यास स्कंदगुप्त में मातृगुप्त द्वारा कविता के महत्व को प्रतिपादित किया गया है।

प्रसंग - मातृगुप्त और मुद्गल के बीच वार्तालाप

व्याख्या

कविता और कला की तुलना करते हुए मातृगुप्त कहता है कि कविता जीवन हेतु अत्यधिक महत्वपूर्ण है। अंधकार का प्रकाश से, असत्य का सत्य से, जड़ का चेतन से और बाह्यजगत का अंतर्जगत से संबंध स्थापित करने का काम कविता ही तो करती है

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विशेष

1. कविता का ~~उपयोगितावादी~~ उपयोगितावादी दृष्टिकोण व्यंजित हुआ है।
2. आचार्य शुक्ल भी अपने निबंध 'कविता क्या है' के माध्यम से कविता के ऐसे ही महत्व को प्रतिपादित करते हैं।
3. तत्समी विधान युक्त खड़ी बोली का प्रयोग द्रष्टव्य है।
4. सूत्र शैली दर्शित है।
   ये कवित्व वर्णमय चित्र है।

प्रासंगिकता

वर्तमान में बढ़ती प्रखरताओं से कविताओं का महत्व पहले की तुलना में बढ़ा है

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

2. (क) 'नई कहानी' के भीतर अमरकांत के वैशिष्ट्य को 'ज़िंदगी और जोंक' कहानी के आधार पर लक्षित कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न सख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

4. (क) देशकाल, वातावरण और भाषा-शिल्प की दृष्टि से मैला आँचल की समीक्षा कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

फणीश्वर नाथ रेणु कृत मैला आँचल में ना केवल आंचलिक उपन्यास धारा का सूत्रपात किया बल्कि रेणु ने एक ही बार आंचलिक उपन्यास को उस सर्वश्रेष्ठता के बिंदु पर पहुंचा दिया जहाँ परवर्ती रचनाकार तो क्या वह स्वयं भी न पहुंच पाये। इस सर्वश्रेष्ठता का आधार मैला आँचल के देशकाल, वातावरण और भाषा शिल्प में ही छिपा है

मैला आँचल के देशकाल के स्तर पर बात करे तो, रेणु शुरुआत में ही स्पष्ट कर देते हैं "यह है आंचलिक उपन्यास और कथानक है पूर्णिया" वस्तुतः वह पूर्णिया के एक छोटे से गाँव मेरीगंज को उठाते है

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

और उसकी स्थानीयता में रमकर राष्ट्रीय जीवन की धारा भी बहाते है।

जहाँ तक काल संदर्भ की बात है तो मैला आँचल में घटित घटनाएँ स्वतंत्रता पूर्व के कुछ वर्षों पहले तथा स्वतंत्रता बाद के कुछ वर्षों तक की है।

वातावरण के स्तर पर वह ग्रामीण और प्रकृति के करीब रखते है। उदाहरण हेतु

- गेहूँ की सुनहली बालियों से भरे हुए खेतों में पुरवैया हवा लहरें पैदा करती है

मैला आँचल की उत्कृष्टता का सर्वाधिक महत्वपूर्ण आधार इसकी भाषा ही है वह स्थानिकता दिखाने हेतु न केवल देशज शब्दों

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

का अत्यधिक प्रयोग करते है बल्कि अंग्रेजी के लोकविकृत रूपों का भी बखूबी प्रयोग करते है जैसे

"जब कमली गमकौआ साबुन से नहाती है तो सारा गाँव गमगमा करता है" — देशज भाषा

"प्रोग्राम - पुलोगराम
लाइब्रेरी - रायबोली" (विकृत रूप)

भाषा मे 'मुहावरों का प्रयोग' इसकी उत्कृष्टता को और बढ़ा देता है

"~~सामने~~ माघ का जाड़ा बाघ को भी ठंडा कर देता है"

भाषा की नादात्मकता > ध्वन्यात्मकता, ना केवल रचना की उम्र बढ़ाती है बल्कि पाठक को भी मंत्र मुग्ध करती है जैसे

"धिन्ना धिन्ना धिन्ना
धिन तक धिन्ना
धिन तक धिन्ना"

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

भाषा में सांस्कृतिक वर्णनों का प्रयोग इसकी उम्र को और बढ़ा देते है।

" याद जो आवे है आरी
तोहरि सुरतिया है, साले
करजेवा में तीर "

भाषा में प्रतीकात्मकता, सूत्री शैली की उपस्थिति, उपमा शैली की प्रीति होती है। जैसे

" जवानी की सुंदरता आग
बरसाती है। जबकि बुढ़ापे
की सुंदरता स्नेह बरसाती है "

देशकाल वातावरण और भाषा शैली का उत्कृष्टता तीनों मिलकर मैला आँचल को उत्कृष्ट बनाते है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'भोलाराम का जीव' कहानी स्वातंत्र्योत्तर भारत की कार्यपालिका में व्याप्त भ्रष्टाचार का पर्दाफाश करती है।' - विवेचन कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

हरिशंकर परिसाई सामाजिक - आर्थिक राजनैतिक जीवन में व्याप्त विसंगतियो को उजागर करने वाले रचनाकार है 'भोलाराम का जीव' कहानी में, वह कार्यपालिका में व्याप्त भ्रष्टाचार को ही दर्शाते है।

भोलाराम एक सरकारी कर्मचारि है। जोकि रिटायर्ड है और पेंशन पर निर्भर है। ~~किन्तु~~ पेंशन प्राप्त करने हेतु उनसे रिश्वत रूपी धन की माँग की जाती है। भारत के स्वतंत्र्योत्तर परिदृश्य में इस प्रकार रिश्वत की माँग बेहद आम थी। अंतत: पेंशन प्राप्त करने की कोशिशो में ही भोलाराम

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

की मृत्यु हो जाती है और उसकी आजीवन पेंशन की उम्मीद में सरकारी दफ्तर में भटकती रहती हैं

हरिशंकर परसाई ग्रामपालिका में व्याप्त भ्रष्टाचार का उजागर कई रूपों में करते हैं। वह चित्रगुप्त के प्रतीक के माध्यम से दिखाते हैं कि ठेकेदारों ने मिल प्रकार भ्रष्ट आचरण अपनाते हुए बेहद कमजोर बिल्डिंग, सड़क इत्यादि बनायी। जो कब ध्वस्त हो जाए कहा नहीं जा सकता है भ्रष्टाचार की यह समस्या न केवल तब व्याप्त थी बल्कि वर्तमान में भी व्याप्त है। आज भी

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न सख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

ऐसी सड़कें बनाई जाती है जो
मात्र एक बारिश भी सहन
नहीं कर पाती।

प्रेमचंद भी 'सभ्यता के रहस्य'
कहानी में एक जज के इसी
तरह भ्रष्ट होने के बावजूद
सभ्य बने रहने का रहस्य
खोलते हैं। 'भोलाराम के जीव'
कहानी में भ्रष्ट चरित्र अधिक
तरक्की करते हुए दिखाई
देते हैं वर्तमान की भी सच्चाई
कुछ इसी प्रकार की है

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'कविता क्या है' निबंध के आधार पर आचार्य रामचंद्र शुक्ल की काव्य-दृष्टि पर प्रकाश डालिए। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

आचार्य शुक्ल के काव्यशास्त्रीय निबंधों में सर्वश्रेष्ठ निबंध 'कविता क्या है' में वह 'कविता के सामाजिक महत्व' के साथ साथ अपनी काव्य दृष्टि का भी प्रतिपादन करते हैं।

आचार्य शुक्ल कविता हेतु बिंब ग्रहण को आवश्यक मानते हैं। वे कहते हैं कि "कविता में मात्र अर्थग्रहण से काम नहीं चलता बल्कि बिंब ग्रहण भी आवश्यक है।"

वे कविता हेतु पारिभाषिक शब्दों के प्रयोग के निषेध की बात करते हैं साथ ही रूप व्यंजक शब्दों (जैसे कृष्ण हेतु मुरलीधर) के प्रयोग की वह

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रशंसा करते हैं।

कविता में ध्वन्यात्मक तथा नादात्मक गुणों की उपस्थिति को वह सकारात्मक रूप से देखते हैं उनका मानना है कि इससे कविता की उम्र बढ़ती है।

कविता में प्रतीकों की उपस्थिति को वह काम्य नहीं मानते हैं। यही कारण है कि छायावाद को वह प्रशंसा के दृष्टिकोण से नहीं देखते हैं।

अलंकारों के संदर्भ में भी वह स्पष्ट करते हैं कि जिस प्रकार एक कुरूप स्त्री अलंकार लाद कर सुंदर नहीं बन सकती उसी प्रकार कविता

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
दृष्टि The Vision
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

में सुंदरता बढ़ाने हेतु अलंकारों का प्रयोग नहीं होने चाहिए।

"वक्रता" के संदर्भ में: शुक्ल जी स्पष्ट करते है कि बुद्धि प्रेरित वक्रता की बजाय भाव प्रेरित वक्रता मान्य ही यही कारण है कि वह केशवदास की आलोचना करते है और सूरदास की अत्यधिक प्रशंसा करते है

इसके साथ ही रस की लोकमंगल वादी अवधारणा में वह कविता के सामाजिक हितों के पक्षपोषण होने की इसलिए भी पक्ष करते है

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

Section–B

5. निम्नलिखित गद्यांशों की (लगभग 150 शब्दों में) ससंदर्भ व्याख्या करते हुए उनके रचनात्मक सौंदर्य का उद्घाटन कीजिये: $10 \times 5 = 50$

(क) उसकी आंखें बन्द हो गयीं और जीवन की सारी स्मृतियाँ सजीव हो-होकर हृदय-पट पर आने लगीं, लेकिन बे-क्रम, आगे की पीछे, पीछे की आगे, स्वप्न-चित्रों की भाँति बेमेल, विकृत और असम्बद्ध। वह सुखद बालपन आया, जब वह गुल्लियाँ खेलता था और माँ की गोद में सोता था। फिर देखा, जैसे गोबर आया है और उसके पैरों में गिर रहा है। फिर दृश्य बदला, धनिया दुलहिन बनी हुई, लाल चुंदरी पहने उसको भोजन करा रही थी। फिर एक गाय का चित्र सामने आया, बिल्कुल कामधेनु-सी। उसने उसका दूध दुहा और मंगल को पिला रहा था कि गाय एक देवी बन गयी और...।

प्रेमचंद सामाजिक विद्रूपताओं को उजागर करने वाले रचनाकार हैं। वे अपने उपन्यास गोदान में होरी के माध्यम से कृषक जीवन में व्याप्त शोषण को पूर्णतः यर्थाथवादी दृष्टिकोण से अभिव्यंजित करते हैं।

मिसानी छोड़ मजदूरी करने की अभिशाप होरी अंतत: मृत्यु का इंतजार कर रहा है। इस समय उसके अवचेतन मन में पूरे जीवन की फिल्म सी चल पड़ती है कभी वह गुल्लीयां खेलता है, कभी माँ की गोद में सोता है, कभी धनिया को दुल्हन के रूप में देखता है और अंतत: उसके

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

जीवन भर की आस - 'कामधेनु गाय' का चित्र प्रस्तुत होता है

विशेष

① अदम्य जिजीविषा से युक्त होरी की मृत्यु कराकर प्रेमचंद ने कृषक जीवन की करुण गाथा का मर्मस्पर्शी चित्रण किया है

② कृषकों की यही दशा मैला आंचल में भी अभिव्यक्त हुई है

③ भाषा सरल सहज खड़ी बोली है

④ चेतना प्रवाह शैली द्रष्टव्य है।

प्रासंगिकता

① वर्तमान किसान की करुण गाथा भी होरी के ही समान है। वर्तमान में कृषि 'लाभ का सौदा' नहीं है फलतः किसान होरी की ही भांति खेती छोड़ने को अभिशप्त है। वर्तमान में बढ़ते कृषक आंदोलन, कृषि ऋण माफी इसी को अभिव्यंजित करती है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(ख) आर्य ! जो तुमसे भय करता है, उससे तुम भी भय करते हो। शक्तिमान का भय सुषुप्त है, शक्तिहीन का जागरित। भय का कारण होने से भय अवश्य होगा। निर्भय वही है, जो भय के कारणों से मुक्त है। तुम्हारी शक्ति से यदि दूसरा भयभीत है तो उसका भयभीत रहना तुम्हारे भय का गुप्त बीज है। अनुकूल भूमि और ऋतु पाने से भय का यह बीज किसी भी समय अंकुरित हो सकता है। आर्य, ऐसी अवस्था में शक्ति अभय का नहीं, भय का ही कारण है। अन्य के भय का और अपने भय का भी।

व्याख्येय पंक्तियाँ मार्क्सवादी रचनाकार यशपाल के उपन्यास दिव्या से उद्धृत है।

कवि कहता है कि भय परस्पर अन्योनआश्रित है। जो तुमसे भय करता है उससे तुम भी करोगे। वस्तुत: 'भय का कारण' होने से भय होता है। जो डर भय के कारणों से मुक्त है वह निर्भय है। तुम्हारी शक्ति से अन्य लोगों का भयभीत होना तुम्हारे खुद के भय का गुप्त बीज भी हो सकता है। इस प्रकार कवि स्पष्ट करता है कि शक्तिवान बन जाने मात्र से अभय नहीं रहा जा सकता शक्तिवान होने दूसरों के भय और खुद के भय का कारण बनता है

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विशेष

① शक्तिवान होने के लाभ हानि का बेहद तार्किक चित्रण

② तत्समी खड़ी बोली

③ आगमनात्मकता शैली दर्शित होती है

प्रासंगिकता

① वर्तमान में परमाणु शक्ति सम्पन्नता से युक्त राष्ट्रों के बीच इसी प्रकार का डर है

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) इसे ले तो जा रहा हूँ, पर इतना कहे देता हूँ, आप भी समझा दें उसे- कि रहना हो तो दासी बनकर रहे। न दूध की, न पूत की। हमारे कौन काम की, पर हाँ, औरतिया की सेवा करे, उसका बच्चा खिलावे, झाड़ू, बुहारु करे तो दो रोटी खाय, पड़ी रहे। पर कभी उससे ज़बान लड़ायी तो खैर नहीं। हमारा हाथ बड़ा ज़ालिम है। एक बार कूबड़ निकला, तो अगली बार प्रान ही निकलेगा।

धर्मवीर भारती सामाजिक विसंगतियों का प्रदर्फाश करने वाले रचनाकार हैं। वह अपनी कहानी गुलकी बन्नो में नारी जीवन की दारुण गाथा को अभिव्यंजित करते हैं।

गुलकी बन्नो के पति के गुलकी बन्नो को ले जाते हुए स्पष्ट कर देता है कि वह इसे ले तो जा रहा है किन्तु इसे दासी के रूप में रहना होगा। उसकी औरत और बच्चे की सेवा करनी होगी। अन्यथा जिस प्रकार पिछली बार गुलकी बन्नो के कूबड़ निकला था उसी प्रकार इस बार कूबड़ निकलेगा।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विशेष

① नारी जीवन में व्याप्त पराधीनता, शोषण की बेहद मर्म स्पर्शी चित्रण से युक्त पंक्तियाँ है

② घरेलू हिंसा का बेहद विकृत रूप का चित्रण

③ तद्भव प्रधान खड़ी बोली

प्रासंगिकता

① वर्तमान में भी बांझपन, जैसे रोगों से युक्त महिलाओं की दुर्गति कुछ इसी प्रकार की है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(घ) तुम मेरे सम्पूर्ण जीवन के प्रयत्नों को, अपने वंश के भविष्य को एक युवती के मोह में नष्ट कर देना चाहते हो! महापण्डित चाणक्य ने कहा है, "आत्मनं सततं रक्षेत दारैरपि धनैरपि।" पुत्र, स्त्री भोग्य है। मति-भ्रम होने पर मोह में पुरुष स्त्री के लिये बलिदान होने लगता है। वत्स, ऐसी ही परिस्थिति में नीतिज्ञ महत्त्वाकांक्षी और परलोककामी पुरुष के लिये नारी को पतन का द्वार कहते हैं।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

यशपाल अपने उपन्यासों में वर्तमान समय की समस्याओं और उन समस्याओं की निरंतरता की पड़ताल करते हैं। 'दिव्या' की उक्त पंक्तियों में प्रेस्थ अपने पुत्र को समझा रहे हैं।

प्रेस्थ कहता है कि पुत्र तुम एक युवती के मोह में मेरे सम्पूर्ण जीवन के प्रयत्नों व कर्मों को नष्ट करना चाहते हो पुत्र स्त्री भोग हेतु है। अतः किसी एक युवती के प्रति मोह व्यर्थ है। ऐसा अक्सर बुद्धि भ्रष्ट होने पर होता है। हे पुत्र कई महापुरुष नारी को पतन का द्वार इसलिए ही तो मानते है

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

दृष्टि The Vision
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विशेष

(1) भूतकाल के समय में नारी को लेकर भोगवादी दृष्टिकोण व्यंजित होता है।

(2) कई भारतीय दर्शनों में भी 'नारी' को 'पतन का द्वार', 'माया' इत्यादि कहकर त्याज्य माना गया है।

(3) भाषा तत्सम बिंब विधान युक्त खड़ी बोली है।

(4) चाणक्य के माध्यम से कथन की युक्ति - 'अंतर पाठ्यता' शैली को दर्शाता है।

प्रासंगिकता

चूंकि यशपाल समस्याओं की निरंतरता की पड़ताल करते हैं और नारी के प्रति वर्तमान दृष्टिकोण में भी साम्यता पाते हैं वर्तमान में नारी का बढ़ता वस्तुकरण, पार्नोग्राफी, इत्यादि इसी भोगमूलक दृष्टि का परिचायक है

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) सुख और दुख अन्योन्याश्रय हैं। उनका अस्तित्व केवल विचार और अनुभूति के विश्वास में है। इच्छा ही सर्वावस्था में दुख का मूल है। एक इच्छा की पूर्ति दूसरी इच्छा को जन्म देती है। वास्तविक सुख इच्छा की पूर्ति में नहीं, इच्छा से निवृत्ति में है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'यशपाल' कृत कि उपन्यास 'दिव्या' में मारिश और दिव्या के बीच का वार्तालाप दर्शित है।

मारिश कहता है कि सुख और दुख अन्योन्याश्रय है। दुख का मूल कारण इच्छा है और एक इच्छा दूसरी इच्छा को जन्म देती है। वास्तविक सुख हेतु जरूरी है कि व्यक्ति इच्छा से ही ~~निवृत्ति~~ दूर हो जाए।

विशेष

① बौद्ध धर्म का स्पष्ट प्रभाव ~~जिसमें~~ 'चार आर्य सत्य' में इच्छा को ही दुखों का कारण माना गया है

② भाषा तत्सम प्रधान खड़ी बोली

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

है।

③ सूत्र शैली द्रष्टव्य है
" सुख और दुख अन्योन्याश्रय है।

प्रासंगिकता

वर्तमान में भी यह सत्य है कि ~~इच्छा~~ अनियंत्रित इच्छाएँ व्यक्ति के जीवन को अव्यवस्थित कर देती है। भ्रष्टाचार इत्यादि भ्रष्ट आचरण अनियंत्रित इच्छाओं के ही कारण है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

6. (क) 'गोदान' भारतीय किसान के पूरे जीवन-संघर्ष और इसमें उसके पराभव की करुण गाथा है।' इस कथन के संदर्भ में 'गोदान' का विवेचन कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

~~कृ तो प्रेमचंद~~ सामाजिक विद्रूपताओं को उजागर करने वाले रचनाकार प्रेमचंद ~~के~~ द्वारा किसानों की करुण गाथा का चित्रण गोदान में प्रमुखता से किया ~~है~~ गया है।

प्रेमचंद होरी के माध्यम से यह दिखाते है कि अदम्य जिजीविषा से जीवन जीने वाला किसान भी शोषण की चक्की ~~है~~ में अंततः मृत्यु को अभिशप्त है। यही कारण है कि राम विलास शर्मा कहते है कि "गोदान में प्रेमचंद की प्रकाश अभ्यस्त आंखों ने अंधेरा देखने की हिम्मत जुटाई है"

~~अ~~ होरी जैसा किसान जो एक गाऊ की सामान्य सी लालसा रखता हो, ~~है~~ उसे पूरी न कर पाना न केवल होरी बल्कि उसके जैसे करोडों किसानों की

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
दृष्टि The Vision
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

की करुण गाथा ही है।

गोदान में प्रेमचंद पूरी पड़ताल के साथ उन सभी कारणों की खोज भी करते हैं। जो भारतीय किसान के पराभव की करुण गाथा हेतु जिम्मेदार है। वह जमींदार साहूकारों के शोषण के माध्यम से किसान की ऋण ग्रस्तता जैसी समस्याओं को अभिव्यंजित करते हैं। गोदान के खलिहान के दृश्य में यह स्पष्ट दिखता है कि किस प्रकार किसान की फसल का अधिकांश भाग जमींदार और साहूकार हथिया लेते हैं। और बची कुची फसल से साल भर का निर्वाह न होने पर वह ऋण लेते हैं। ऋण ग्रस्तता का अंतहीन चक्र यूँ ही चलता रहता है।

वर्तमान भारत में भी किसानों की ऋणग्रस्तता की यही

कृपया इस स्थान कुछ न लिखें।

(Please don't wr anything in this

Copyright – Drishti The Vision Foundatio

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

~~[struck out]~~ पीड़ा व्यंजित होती है। ऋणग्रस्तता के कारण बढ़ती आत्महत्याएँ आखिर किसानों की करुण गाथा ही तो है।

आगे प्रेमचंद अन्य कारणों की भी पड़ताल भी करते हैं। वह बताते हैं कि होरी जैसे भारतीय किसान धर्म और मरजाद की चक्की में भी पिसते हैं। इसी धर्म और मरजाद के कारण होरी को कई बार आर्थिक नुकसान झेलना पड़ता है।

पटवारी, पुलिस जो जनता की सेवा हेतु है वह भी किसानों के शोषण हेतु बड़ा कारण है। रामसेवक स्पष्ट करता है कि "किसान अगर पटवारी को दस्तूरी न दे तो उसका निर्वाह न हो"। इसी प्रकार हीरा द्वारा गाय को जहर देने

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

के प्रसंग में कॉनस्टेबित की भ्रष्ट प्रवृत्ति भी होरी जैसे आम किसान के के शोषण का कारण बनती है।

आदर्शोन्मुख यथार्थवाद से चरम यथार्थवादी की यात्रा करने वाले प्रेमचंद के कथा संसार में गोदान चरम यथार्थवादी रचना है। जिसमें होरी जैसा अदम्य जिजीविषा युक्त किसान मृत्यु को अभिशप्त है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) क्या 'दिव्या' उपन्यास में यशपाल मार्क्सवादी विचारधारा को प्रक्षेपित करने में सफल हुए हैं? तार्किक उत्तर दीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

यशपाल मार्क्सवादी रचनाकार है किन्तु दिव्या में उन्होंने अपने मार्क्सवादी विचार ज्यों का त्यों प्रक्षेपित नहीं किए है।

दिव्या में मारिश के माध्यम से मानवतावाद का जो प्रक्षेपण हुआ है उसमे मार्क्सवाद की भौतिकवादी अवधारणा की छाप दिखती है। चार्वाक दर्शन के प्रतिनिधी मारिश द्वारा परलोकवाद और भाग्यवाद का खंडन मार्क्सवादी लौकिक अवधारणा का ही प्रक्षेपण है।

"जिस स्थूल प्रत्यक्ष जगत का अनुभव सम्पूर्ण जन करता हो उसे भ्रम मानना और जिस कल्पना का अनुभव ब्रह्मवादी करता है उसे सत्य मानना"

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान … कुछ न लिखें।
(Please don't wri… anything in this s…

मार्क्सवादी समतावादी विचारों का पोषक है। यही कारण है कि यशपाल ने दास प्रथा, जातिप्रथा और नारी वेदना का चित्रण बेहद मर्मस्पर्शी रूप से किया है।

दास व्यवस्था की भयानकता को दर्शाते हुए वह दिखाते हैं कि किस प्रकार दासों का व्यापार वस्तु की भांति होता था। उन्हें स्वयं के जीवन या अपनी संतानों पर भी अधिकार नहीं था।

पृथुसेन के माध्यम से यशपाल ने जातिव्यवस्था पर सवाल उठाए हैं। निम्न जाति होने के कारण पृथुसेन दिव्या से प्रेम करने व उसकी शिविका उठाने में खुद को नियोग्य पाता है कहता है "जन्म का अभिशाप. यदि यह अभिशाप है तो इसका परिमार्जन कैसे हो"

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundatio…

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इसी प्रकार यशपाल विवाह व्यवस्था में व्याप्त नारी पराधीनता और नारी विवशता का चित्रण करते है दिव्या के माध्यम से वह नारी के जीवन की सम्पूर्ण पीड़ाओं को दर्शित करते है।

'दिव्या' में मार्क्सवादी अवधारणा 'प्रेमिसम' की छाप भी दिखती है। "दिव्या" शोषण और विभिन्न परिस्थितियों को झेलते हुए 'जैनेंद्र' की 'मृणाल' और चित्रलेखा (भगवती शर्मा) की भांति उसी जीवन को स्वीकार नहीं करती बल्कि अपने नियति को बदल भी देती है।"

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'धर्मवीर भारती की कहानी 'गुलकी बन्नो' भारतीय समाज में नारी की दयनीय स्थिति का यथार्थपूर्ण और तल्ख चित्रण करती है।' विवेचन कीजिये। 15

सामाजिक विसंगतियो का यथार्थवादी ढंग से अपने उपन्यासो, कहानियो में चित्रण करना धर्मवीर भारती की सर्वप्रमुख विशेषता है वह अपनी कहानी 'गुलकी बन्नो' में नारी जीवन में व्याप्त विसंगतियो का निरूपण बहुत मार्मिक ढंग से करते है। भारतीय समाज की ~~समस्त~~ नारी समता विरोधी चेतना का वह प्रतिकार करते है। किस प्रकार नारि को मात्र अपने पति के उपर आत्मनिर्भर बना दिया जाता है शादी के बाद लडकी के घरवाले भी किस प्रकार लडकी से नाता छोड़ लेते है। उसे शादी से ना केवल पहले

कृपया इस स्थान कुछ न लिखें।

(Please don't wr anything in this

Copyright – Drishti The Vision Foundatio

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

बोझ समझा जाता है। बल्कि शादी के बाद भी वह परिवार हेतु बोझ ही होती है।

शादी के बाद अगर नारी बाँझ निकल जाए। तो जैसे पुरुष को नारी पर क्रूरता करने का अधिकार सा मिल जाता है।

"हमारा हाथ बड़ा जालिम है एक बार कुबड़ निकला, तो अगली बार प्राण ही निकलेगा"

पुरुष को बहुविवाह करने का अधिकार है वहीं नारी को क्या है? इसी बात की अभिव्यंजना गुलकी बन्नो में भी होती है। गुलकी बन्नो की आर्थिक पराधीनता उसे पुनः अपने पति की क्रूरता झेलने हेतु विवश अमानवीयता करती है। वह खुद प्रथम पत्नी

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
दृष्टि The Vision
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

होते हुए भी पति के दूसरे पत्नी और बच्चों की सेवा करती हो आखिर परिवार में उसकी स्थिति है ही क्या ? मात्र एक नौकरानी जैसी ?

स्पष्ट है कि गुलामी बच्चों भारतीय समाज में नारी की दयनीय स्थिति का यथार्थपूर्ण और तत्य चित्रण करती है।

कृपया इस स्थान कुछ न लिखें।

(Please don't wr anything in this

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundati

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

7. (क) 'तुलसी साहित्य के सामंत-विरोधी मूल्य' निबंध के आधार पर गोस्वामी तुलसीदास के रचनाकर्म के प्रति डॉ. रामविलास शर्मा के मत की उपस्थापना कीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

डा॰ रामविलास शर्मा अपने निबंध 'तुलसी साहित्य के सामंत विरोधी मूल्य' में तुलसीदास की प्रगतिशीलता का प्रतिपादन करते है।

तुलसी दास पर वर्णव्यवस्था के पोषक होने के आरोपों का खंडन करते हुए उनकी समतावादी सोच का उजागर डा॰ राम बिलास शर्मा करते है।

"धूत कहौ अवधूत कहौ
राजपूत कहौ चाहे जोलहा कहौ कोई
कोई की बेटि सो बेटा न ब्याहब
मांगे के खाइबो मसीत को सोइबो"

इसी प्रकार वह निषाद, केवट कोल किरात प्रसंग में तुलसीदास की प्रगतिशीलता को भी दर्शाते है। शबरी के झूठे बेर भी राम को खिलाना तुलसीदास की

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

प्रगतिशीलता को ही अभिव्यंजित करता

है।

इसी प्रकार तुलसीदास को नारी चेतना का विरोधी माना जाता है। उनके रचनाकर्म में कई कथन इस बात की पुष्टि करते है जैसे -

ढोल गवार शुद्र पशु नारी

सकल ताड़ना के अधिकारी ।

किन्तु राम विलास शर्मा तुलसी की प्रगतिशीलता के भी उदाहरण पेश करते है जैसे

कत विधी सृजी नारि जग माही

पराधीन सपनेहुं सुख नाही ।

वस्तुत: तुलसी के नारी विरोधी चेतना के अधिकांश प्रसंग खलनायक पक्ष की ओर से आए है शर्मा जी के अनुसार तुलसी की वास्तविक मनोवृत्ति नारी स्वतंत्रता के पक्षधर है

कृपया इस स्थान कुछ न लिखें।

(Please don't wr anything in this

Copyright – Drishti The Vision Foundatio

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

तुलसी सिर्फ समाज हेतु प्रगतिशीलता का वर्णन नहीं करते बल्कि राजनैतिक और आर्थिक स्तर पर भी तुलसी प्रगतिशीलता का प्रणयन करते है

राजनैतिक स्तर पर वह राजा के नैतिक होने की जरूरत दर्शाते है। साथ ही ऐसे राज्य की कल्पना करते है जिसमें व्यक्ति सभी दुखों से मुक्त हो

"जासु राज प्रिय प्रजा दुखारी
सो नृप अवस नरक अधिकारी"

आर्थिक स्तर पर तुलसी आर्थिक विसंगतियों को दूर करने की छटपटाहट में दिखते है उन्होंने गरीबी भुखमरी और अकाल जैसी समस्याओं का चित्रण

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
दृष्टि The Vision
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न सख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कर प्रगतिशीलता के ध्वज वाहक बनते हैं वह अकाल की विनाशता को प्रतिबिंबित करते हुए कहते हैं

" कलि बारह बार अकाल परे
बिन अन्न सब दुखी लोग मरे"

स्पष्ट है कि तुलसी के साहित्य में ना केवल सामंतविरोधी मूल्य प्रदर्शित होते हैं। बल्कि वह समानता, नारी स्वतंत्रता, प्रगतिशीलता जैसे गुणों के ध्वज वाहक हैं।

कृपया इस स्थान कुछ न लिखें।

(Please don't w anything in this

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundatio

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) प्रेमचंद की कहानी 'सद्गति' दलित-प्रश्न को उठाने में कहाँ तक सफल सिद्ध हुई है? विवेचनात्मक उत्तर दीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सामाजिक विदूपताओं को उजागर करने वाले प्रेमचंद का कथा संसार आदर्शोन्मुख यथार्थवाद से चरम यथार्थवाद की ओर अग्रसर हुआ है

1930 में लिखी सद्गति उनकी चरम यथार्थवादी सोच की दर्शाती कविता ही है। जिसमें वह दलित प्रश्न को उठाने में काफी हद तक सफल हुए हैं। कहानी में मूलतः दलित मनोविज्ञान को दर्शाते हुए दिखाया गया है कि किस प्रकार एक दलित व्यक्ति 'दुखी चमार' सदियों से चले आ रहे शोषण को मानसिक रूप में भी ~~बेगार और शोषण~~ स्वीकार कर चुका है।

दुखी चमार पंडित के घर ~~बेगार~~ उसी मानसिक

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न सख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान कुछ न लिखें।
(Please don't wr anything in this

गुलामी के चलते बेगार करता है और अंततः मर जाता है।

मानसिक स्तर पर शोषण की समग्र प्रक्रिया किस प्रकार दलितों में प्रविशष्ट हो चुकी है वह प्रेमचंद बखूबी दिखाते है। जब 'दुखी चमार' हुक्का जलाने हेतु पंडिताइन से थोड़ी आग मांगता है तो पंडिताइन द्वारा फेंकी हुई आग उसके सिर पर लगती है दुखी चमार तुरंत इसे पंडित के पवित्र घर को अपवित्र करने के दण्ड के रूप में स्वीकार करता है। वह कहता है

"एक दलित ब्राह्मण के घर कैसे चला जाए। बड़े पवित्र होते है ये लोग, तभी तो संसार पूजता है।"

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundatio

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सद्गति में दलित ~~प्रश्न~~ प्रश्न को उठाने के साथ साथ दलित चेतना के उभरने के संकेत भी प्रेमचंद प्रस्तुत करते हैं। सद्गति में एक चरित्र के माध्यम से वह ~~दिखाते हैं कि~~ उभरती हुई दलित चेतना भी दिखाते हैं।

"~~खबरदार~~ कोई मुर्दा उठाने गया तो पंडित होगो तो अपने घर के होगें। दिल्लगी है क्या कोई किसी गरीब की जान ले लो अब पुलिस की तहकीकात होगी।"

सामाजिक यथार्थ के चित्रण में उत्कृष्ट प्रेमचंद का कथासंसार लगभग सभी वर्गों की समस्याओं को उठाता है। सद्गति दलित वर्ग की समस्याओं को उठाती उत्कृष्ट कहानी है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
दृष्टि The Vision
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'स्कंदगुप्त' नाटक के नामकरण पर विचार कीजिये। 15

किसी भी रचना का नामकरण बेहद महत्वपूर्ण होता है। वस्तुतः नामकरण ऐसा होना चाहिए जो पाठक के रचना पढ़ते समय उसके मन को अंतर्भूत करें। और रचना के प्रतिपाद्य को स्पष्ट करें।

'स्कंदगुप्त' नाटक के नामकरण के पीछे जयशंकर प्रसाद के स्पष्ट कारण है। वस्तुतः राष्ट्रीय चेतना से पुना प्रसाद किसी ऐसे नाम की तलाश में थे। जो लोगों के सांस्कृतिक राष्ट्रवाद को उद्बोधन कर सके। चूँकि स्कंदगुप्त ने आर्यावर्त की रक्षा हेतु विदेशी आक्रांताओं को हराया था अतः यह प्रसाद की राष्ट्रीय चेतना को प्रस्तुत करने में सटीक था।

दूसरी तरफ प्रसाद स्वच्छंदतावादी

कृपया इस स्थान कुछ न लिखें।

(Please don't w anything in thi

Copyright – Drishti The Vision Foundatio

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

परंपरा से अत्यधिक प्रभावित थे जिसमें व्यक्तिवादिता और चरित्र प्रधानता को काफी महत्व दिया जाता है ~~इसी~~ यही कारण है कि स्कंदगुप्त नाटक में नामकरण चरित्रमूलक है।

इसके साथ ही प्रसाद अपनी रचनाओं में अपने दर्शन को प्रक्षेपित करते ही है स्कंदगुप्त नाटक में 'स्कंदगुप्त' के माध्यम से ही वह अपने दर्शन को प्रक्षेपित करते है अतः इससे नामकरण हेतु एक ठोस वजह और मिल जाती है।

स्कंदगुप्त का खंडित व्यक्तित्व के माध्यम से वह नाटक की परिणति को आंनदवादी

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

दिखाने में खासे सफल हुई है स्कंदगुप्त का अंत: में देवसेना को प्राप्त न कर पाना इसी आनंदवाद का परिणाम है

कृपया इस स्थान कुछ न लिखें।

(Please don't wri anything in this s

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundatio

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

8. (क) 'अपने उपन्यासों एवं कहानियों में प्रेमचंद की बुनियादी चिन्ताएँ अपने समय की भी हैं और भविष्य की भी हैं।' इस विचार से आप कहाँ तक सहमत हैं? तर्क सहित उत्तर दीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation